रात्रि क्लास 17-12-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चों को ख्याल रहता है कि ऐसे ऐसे बतावें जो उन्हों के समझ में आये। भल अजायबघर में आते हैं अच्छा2 भी करते हैं परन्तु फर्सत कम है। तुम बच्चों को भी इतनी फर्सत नहीं है। तुमको बाप डायरेक्शन देते हैं बाप को याद करो। नहीं कर सकते हो तो कहते हो फर्सत नहीं है। माया बाप को याद करने की फुर्सत नहीं देती। फुर्सत ले लेती है। तब कहते हो बाबा सारे दिन में आधा घंटा एक घंटा याद ठहरती है। एवरेज जो समझते हैं हम दो घंटा याद करते हैं वह हाथ उठावें। योग अर्थात योग। मास्टर पढ़ाते हैं तो स्टुडेन्ट का मास्टर से योग होता है ना। वह है स्थूल याद। हेर पड़ी हुई है। जितना घंटा पढ़ते हैं याद में रहते हैं। यह तो है निराकार बाप। बच्चों को कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाबा इसके लिये कहते हैं कितना समय याद करते हो। थोड़ा2 कर के दो घंटा याद करते हो। जैसे बाबा यहां बैठे हैं बाबा मुरली चलाते हैं धारणा नहीं होती है तो बुधि बाहर चली जाती है। स्कूल में बच्चे धारण करते हैं ना। धारणा हो तो सर्विस भी करे ना। बाबा एक घंटा सुबह को बैठते हैं तो वह एक घंटा बाप की याद में रहते हो या बुधि बाहर चली जाती है। यह है बिल्कुल नई बात। इसमें डिफीकल्ट है। माया की युध चलेगी। कहां न कहां बुधि चली जाती है। अगर सारा सुने और नोट करे तो याद में रह सकते हैं। बाहर में तो बुधि जा न सके। लिंक टूटनी न चाहिए। पिछाड़ी तक जिसकी लिंक नहीं टूटती है वही ऊंच पद पावेंगे। बाप ने समझाया है जितना बाप को याद करते रहेंगे उतना ही तुम खुशी में रहेंगे। जब तुम स्वर्ग में थे तो भी तुम बहुत खुश थे। सतोप्रधान थे तो बहुत खुश थे। तमोप्रधान बने हो तो बहुत दुःखी हुये हो। यह ड्रामा में नूंध है। योग कैसे लगाया जाता है यह बच्चों को समझाना है। जो वह समझे यह बिल्कुल स्क्युरेट बताते हैं। इनको ही सच्चा योग कहा जाता है। यह जरूर मालूम पड़ना चाहिए। यह दुनिया ही तमोप्रधान है। ऐसा समझाना चाहिए जो वह समझे यह अनुभव से कहते हैं। सुनी सुनाई बात नहीं। हम ही सुखी थे जो दुःखी बने हैं। यही पूज्य देवतायें फिर पुजारी मनुष्य बने हैं। देवतायें पुजारी होते नहीं। मनुष्य ही पुजारी होते हैं। पुजारी है तो ज्ञान नहीं पूज्य है तो भक्ति है नहीं। नई दुनिया और पुरानी दुनिया है ना। यह ड्रामा का स्क्युरेट हिसाब है। नई दुनिया से पुरानी दुनिया होने में कितना टाईम लगता है। बाप ने बताया है दुनिया की आयु स्क्युरेट इतनी है। सेकण्ड भी कम जास्ती नहीं हो सकता। अभी तुम बच्चों की बुधि में है 5000वर्ष पूरे होने का है। एटामिक बम्स की लड़ाई भी लगेगी। साथ2 नैचरल कैलेमिटिज भी होंगी। दोनों मदद दे झटपट काम करेंगे। हास्पीटल आदि तो होंगी नहीं। कहां जावेंगे मरी। पानी भी खत्म हो जावेगा। विलायत में पानी [illegible] है। क्योंकि उन्होंने कुछ [illegible] नहीं उठाया है। रक्त की नदियां भी बहेंगी पिने को। यहां दुःख भी जास्ती है। वहां तो बहुत मीठा2 मौत है। बैठे2 बैठे2 हुआ खलास। तुम खुश होंगे उनका मौत तो बहुत सहज हुआ। मौत हो तो ऐसा ऐसे भी बैठे2 शरीर छोड़ दे। कर्मातीत अवस्था हो तो गिरे भी नहीं वह सब से अच्छा। आगे चल तुम देखेंगे। विलायत में भी होगा जो बैठे2 खत्म हो जावेंगे। वे होश भी हर्षितमुख हो। कुछ तो निशानी चाहिए। आत्मा हर्षित होकर जाती है। आत्मा में हर्षितपना ~~श्रेष्ठपना~~ होगा तो शरीर पर भी आवेगा। आत्मा बड़ी खुशी से हर्षितमुख होकर शरीर छोड़ती है। उनको कर्मातीत अवस्था कहा जाता। वह यह पद पावेंगे। और चीज याद भी न आये। इसको कहा जाता है सबसे मीठा शरीर छोड़ना। इसलिये सर्प का मिसाल देते हैं। प्रेक्टीस यहां से होगी फिर चलती रहेगी। इसको कहा जाता है गुप्त मेहनत। तुम ही जानो और नहीं ~~कोई~~ जानते हैं। हरेक खुद ही जाने हम बाप को कितना याद करते हैं। मोस्ट बिलवेड परम प्रिय बाप है। तुम्हारे सिवाय और कोई स्क्युरेट बाप को याद कर न सके। तुमको तो आक्युपेशन का पता है। इसलिये मोस्ट बिलवेड कहते हो। परम प्रिय परमपिता परमात्मा। फिर अच्छी बात यह है कि यह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। बाप को भूल जाओ तो टीचर को याद करो। गाईड तो साथ में है ना। लिबरेटर भी गाईड भी है। यह तो राईट है दुःख से लिबरेट करने वाला है

बाप। बाबा ने सुनाया ज्ञान पास मिला फिर इस पर विचार सागर मथन करते रहो। बाप भी याद आवेगा चक्र भी याद आवेगा। खुशी का पारा भी चढ़ा रहेगा। शरीर छोड़ हम प्रिन्स बनेंगे। यह फीलिंग नहीं होती है। बच्चों को नालेज तो मिली है। अभी बच्चों को यह रहता है ऊंच नम्बर पावें। टीचर भी खुश होगा। देखेंगे अच्छा पढ़ते हैं तो अच्छा पास होंगे। टीचर को ईजाफा भी मिलता है। बहुत फेल होते हैं। तो टीचर को बदली कर देते हैं। तुम्हारी बुधि में यह सारे विश्व का ज्ञान है। और कोई में नहीं है। वह सभी हैं शुद्र सम्प्रदाय। यह है दैवी सम्प्रदाय। यह तो बुधि में याद है ना। अन्दर में ज्ञान चलता रहना चाहिए। इसमें माया विघ्न बहुत डालती है। आंखें धोखा न देवे इसके लिये बहुत मेहनत करनी है। इसमें विजय तब पा सकते हैं जब कि अशरीरी हो रहे। हम बाबा के बच्चे हैं तब आंखें सिवोल रहती हैं। है बहुत सहज। हम आत्मा है ना। बाप भी है फिर भी याद ठहरती नहीं है। बाबा एकदम बाजू में बैठा है। फिर भी तुम जैसे याद करते हो वैसे हमारा तो और ही बुधि इधर उधर जाता है। हां बच्चों से जरूरी सहज है। बाबा के बाजु में बैठे हैं। भोजन पर याद करता हूं फिर भी भूल जाता हूं। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 19-12-68 :- अब एक की याद में बैठे हो वा एक को तीनों रूपों में याद करते हो? बैठे हो या चलते फिरते तीनों को याद करना अच्छा है। प्रैक्टीस पड़ जावेगी जितना राईट वे में याद करेंगे उतना ही खुशी आती रहेगी। मुस्कराते रहेंगे। तुमको सीखते2 तो बहुत टाईम हुआ है। दिन प्रति दिन पायन्टस भी मिलते रहते हैं। योग का बल भी मिलता रहता है। पायन्टस भी मिलती रहेंगी। फिर तुम बहुत अच्छा समझा सकेंगे। अच्छा गैलप करेंगे। तुम्हारा नाम भी अच्छा होगा। तुमको भी खुशी होगी अभी हम अच्छी रीत समझते हैं। क्योंकि तुम्हारे में बल आता रहता है। अभी बाप को याद करो इसमें नई एडीशन होती है बाबा बाबा भी है टीचर भी है सद्गुरु भी हैं। अर्थ सहित। बराबर बाबा पढ़ाते भी हैं। योग भी सिखलाते हैं। जिस्मानी पढ़ाई में योग की बात नहीं होती। परन्तु टीचर साथ योग रहता ही है। बाबा भी टीचर है। बाप कोई बच्चे का टीचर भी हो सकता है। बाबा लौकिक बाप के पास पढ़ता भी था। 5 वर्ष बाप के पास रहा भी फिर 5 वर्ष पढ़ा भी बाप के पास फिर ईंगलिश पढ़ा न सका। तो फिर दूसरा टीचर मिला। गुरु से जो सीखते थे तो उनके पास बनारस में गये। शिव काशी विश्वनाथ गंगा बस यह मंत्र। तो उनको भी कहते थे ऐसे मंत्र कहो। अर्थ तो कुछ भी समझते नहीं थे। फिर भी सिखलाते थे। यह बातें गुरु सिखलावे। बाप था। टीचर भी बना। फिर गुरु जाकर किया। तो वही सिखलाते थे। फिर अपने कारखाने में लग गया। कुछ न कुछ बाप भी था टीचर भी था यह तो बाप टीचर पुरा सतगुरु भी है? यह ज्ञान की समझानी तो अभी तुमको मिलता है। जब कि हम देवता बनते हैं। तो दैवीगुण धारण करने में ही बहुत टाईम लगता है। तुम बच्चे तो मुख= गृहस्थ व्यवहार में रहते हो। तो मेहनत लगती है। क्रोध भी है ना। इस पर भी विजय पानी है। संगदोष में क्रोध भी आ जाता है। अभी तो तुमको सेफ्टी है। जो घर गृहस्थ में रहते हैं तो बच्चों को सिखलाने आंखें भी दिखानी पड़ती है। (हाथी का मिसाल) तुम बच्चों को भी पाला जाता है ना। कल्प2 बच्चों की पालना की है। बाप यहां पालना करते हैं। मुख्य है यह बात। याद करो दैवीगुण धारण करो। जब कि देवता बनना है तो दैवीगुण जरूर चाहिए। खबरदारी रखनी पड़ती है। कर्म-इन्द्रियों से कुछ न हो। सभी तरफ से बुधि हटाकर मुझ तरफ लगा दो। मालूम तो पड़ा है बाप की श्रीमत पर घर जाना है जरूर। पढ़ाई भी पढ़नी है। अभी भी पढ़ाई ही साथ जावेगी। सिध होता है आत्मा जो सीखकर जाती है वह धारण करती है। अभी है भी यही पढ़ाई मुख्य। गीता में भी है ना मन्मनाभव। मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूं। योग से पाप भस्म होंगे। पढ़ाई भी पढ़ाते हैं। यह बच्चों की बुधि में आना है। बाप सिखलाते भी हैं अपना परिचय भी देते रचना के आदि मध्य अन्त का राज भी समझाते हैं। बच्चों को भी याद से ही तुम्हारे पाप कट जावेंगे। बाप है पतित पावन। तुम सीख गये हो। झट बुधि में आ जाता है। नहीं की बुधि में बैठेगा ही नहीं। यहां एक एक अक्षर का अर्थ समझना है। बेहद का बाप नई सृष्टि रचते हैं।—

१७-१२-६८ रात्रि

बाप तो समझाते हैं बाकी याद तो जब आवे तबकहे ना हमको याद करो। और कोई ऐसे कह न सकेंगे। बाप ही समझाते हैं। स्वदर्शनचक्र दिखाते हैं तो इस पर भी बाप समझाते हैं। 84 के चक्र को याद करना है। जितना2 समझ में बैठता जाता है बच्चों को खुशी भी होती रहती है। कई बच्चे शुरू में और दूसरा कोई संग था नहीं तो स्थिरियम रहे। फिर यहां आय संग मिला तो भाग गये। कुछ बच गये। कोई तो झाड़ के झाड़ थे. फिर संग में कोई की बाहं गई कोई की टांग गई ... कई तो करोड़पति भी बन गये हैं। छोटी2 बच्चियों मुरलियां भी चलाती थी। अभी करोड़पति बन गये हैं। वह याद थोड़ेही आवेगा। भूल जाते हैं फिर बाहर वालों का संग न रहे तो वह अवस्था जल्दी अच्छी हो सकती है। जो सुनते हो वह उगारते रहो तो खुशी भी होगी। और पक्का होता जावेगा। मुख से झट निकलेगा। स्प-वसंत की कथा भी है ना। गुलबकावली की भी कहानी है। माया बिल्ली पासा उल्टा कर देती है। युध चलती है। कोई सुपनखां भी ऐसी होती है। विघ्न बिगर रह नहीं सकती हैं। कोई तो झट झूठी दे देती है। तुम अपना जीवन बनाओ। सारा मदार पढ़ाई पर है। धनवान बनना होता है। वजन भी कर सकते हो यहां से होकर बाहर जाते हैं मास दो में फिर पक्के पड़ जाता है। दो तीन मास हुआ तो फिर वह अवस्था न रहती है। याद करने की कोशिश करते हैं फिर भी भूल जाते हैं। इसको लड़ाई कहा जाता है। एक सेकण्ड की बात बेशक है परन्तु जब सुनते रहे तब पक्का हो जाये। दिल भर न जाना चाहिए। सुनते2 पक्का होते जावेंगे। साथ2 सर्विस करते रहे तो बहुत उन्नति हो। देखा गया विलायत में एक जोड़ा बच्चा बचा हुआ है दूसरे भी ऐसे2 वृधि को पावेंगे। सन्यासी भी कितने हो गये हैं। तुम्हारे पास नशा है। बाप के बदली बच्चे का नाम डाल दिया है। यह भी तुमको मालूम पड़ा है। समझाया जाता है, कल्प पहले भी तुमने समझा है फिर समझते हो। कच्चे हैं तो भागन्ती हो जाते हैं। कोई कहते हैं हम कभी नहीं जावेंगे। और सच्चे सचमुच चले जाते हैं। यह एक युक्ति है। पक्का करने लिये भी बाबा कब युक्ति से कहते हैं माया से खबरदार रहना। नहीं, नहीं तो डंस लेगी। कहते हैं हम पूरा पुरुषार्थ करेंगे। हम बाप से पूरा वरसा जरूर लेंगे। ऐसी मिठाई तो कब मिलने की है नहीं। सेन्सीबुल बच्चों के लिये बहुत सहज हो जाता है। कोई थोड़ा समझेंगे कोई कम। अनेक कुजाती भी आते हैं। यह भी बुधि चाहिए समझने को। जैसे बिच्छू नरम चीज़ पर ही डंक लगाती है। बाप भी कहते हैं पत्थर बुधियों पर टाईम वेस्ट मत करो। वह अपने कुल का है नहीं। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

~~रात्रि क्लास 20-12-68~~ पायन्टस:-

तुम बच्चों को दैवीगुण भी धारण करनी है। आसुरी बन लड़ना झगड़ना नहीं है। माया इतनी जबरदस्त है जो अच्छे2 फर्स्ट बच्चों को भी आपस में लड़ा देती है। देह अभिमान में लाकर लड़ना झगड़ना सिखला देती है। आपस में लूनपानी हो पड़ते हैं। महारथी बच्चों की तो अच्छी रीत माया लाखउतारती है। ऐसे मत समझो हम तो बहुत होशियार हैं। बहुत होशियार को भी माया पछाड़ती है। देह अभिमान में आन से बाप को भूल जाते हैं। ऐसे मीठे बाप को तो न भूलना चाहिए ना। स्त्री पति को भूलती है। पति मर जाता है तो भी उनको याद करती रहती है। यह तो बेहद का बाप तुमको पढ़ा रहे हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं तुम मुझे याद नहीं करते हो। माया भूलाकर कोईत कोई उल्टा काम कराये देतीहै। चूहे बिसल काटती ऐसा है जो पता ही नहीं पड़ता है। इसलिये बाप फिर भी कहते रहते हैं अपने को आत्मा समझो मुझे याद करो। औरों का भी कल्याण करो। बाप का पैगाम दे दैवीगुण धारण कराओ। परन्तु ड्रामा प्लैन अनुसार =कम पद ही पाना है। तो कर ही क्या सकते हैं। कल्प2 नहीं पढ़ते हैं। अभी भी न पढ़ेंगे। सिध हो जाता है आगे कल्प भी नहीं पढ़े थे। ऐसी चलन थी। नाम रूप देशकाल चलन सभी वही रहेंगे। कल्प2 का पुराना स्वभाव है' सो कल्प कल्प ऐसे ही चलते रहेंगे। अच्छा ओम= ओम